श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 47, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज मंगलवार, 22 सितम्बर, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

मोदी कैबिनेट ने किसानों को दिया तोहफा रबी फसलों की MSP बढ़ाई

नई दिल्ली, एएनआइ। कृषि सुधार के विधेयकों को लेकर संसद से लेकर सड़क तक मचे घमासान के बीच सरकार ने सोमवार को लोकसभा में रबी फसलों के समर्थन मूल्य की घोषणा कर दी। गेहूं के मूल्य में 50 रूपए प्रति क्विंटल की वृद्धि की गई है जो 1975 रुपये प्रति क्विंटल हो जाएगा। रबी फसलों के एमएसपी की घोषणा आमतौर पर बोआई शुरू होने के साथ ही होती थी, लेकिन इस बार संसद में एमएसपी को लेकर मचे घमासान के चलते सरकार ने पहले ही इसकी घोषणा कर विपक्ष के आंदोलन को नाकाम करने की कोशिश की है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में सोमवार को हुई आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) की बैठक में रबी सीजन की फसलों की एमएसपी के मसौदे पर मुहर लगाई गई। समिति में किए गए फैसले की जानकारी केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा में दी। उन्होंने बताया कि गेहूं के मूल्य में जहां 50 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि की गई है। वहीं जौ का मूल्य 1525 रुपये से बढ़ाकर 1600 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया गया है।

दलहन फसलों में चना का मूल्य 225 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ाकर 5100 रुपये कर दिया गया है। मसूर के एमएसपी में 300 रूपए प्रति क्विंटल की वृद्धि की गई है जो 4800 रुपये से बढ़कर 5100 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया गया है। रबी सीजन की प्रमुख फसल सरसों का एमएसपी 4425 रुपये प्रति क्विंटल से बढ़ाकर 4650 रुपये कर दिया गया है। कुसुम का भाव 5215 रुपये प्रति क्विंटल से बढ़ाकर 5327 रुपये किया गया है।

संसद में विपक्षी दलों के विरोध के बाद पंजाब, हरियाणा के साथ कुछ अन्य छिटपुट जगहों पर सड़कों पर प्रदर्शन के बीच सरकार का यह फैसला आया है। इससे किसानों के बीच फैलाए जा रहे एमएसपी खत्म करने की भ्रांति दूर करने में मदद मिलेगी। संसद में रविवार को पारित दोनों कृषि विधेयकों को लेकर राज्यसभा में सोमवार को भी विपक्षी दलों ने हंगामा किया, जिससे सदन पूरे दिन के लिए स्थगित कर दिया गया। एमएसपी की जानकारी देने के साथ कृषि मंत्री तोमर ने जोर देकर कहा कि विपक्षी समर्थन मूल्य और मंडी प्रणाली के बारे में फैलाए जा रहे भ्रम को इससे पहले की भांति जारी रहेगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एमएसपी बढ़ाए जाने के अवसर पर कहा, 'किसानों के कल्याण के लिए कार्य करना हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। अन्नदाताओं के हित में काम करने की हमारी प्राथमिकताओं के अनुरूप कैबिनेट ने एमएसपी बढ़ाने का एक और ऐतिहासिक निर्णय लिया है। इससे करोड़ों किसान लाभान्वित होंगे। अधिक एमएसपी जहां किसानों को सशक्त करेगी, वहीं उनकी आय दोगुनी करने में भी मदद करेगी। कृषि सुधारों को संसद की मंजूरी के साथ बढ़ी हुई एमएसपी से अन्नदाताओं की गरिम- कृषि मंत्री ने ट्वीट कर बताया कि गेहूं का समर्थन मूल्य 50 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ाकर 1975 रुपये कर दिया गया है। हालांकि, इस बात के संकेत पहले ही मिल चुके थे कि सरकार रबी की फसलों के समर्थन मूल्य में वृद्धि कर सकती है।

इस मौके पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा, कि पिछले 6 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में एमएसपी में लगातार वृद्धि की गई है। इससे एमएसपी के प्रति जो गलतफहमी है वह दूर हो जानी चाहिए। मैं मानता हूँ कि किसानों के हित में मोदी जी के नेतृत्व में जो फैसले लिए गए हैं वे कृषि और किसान-कल्याण की दृष्टि से मील का पत्थर रहे हैं। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट ने रबी की कई फसलों की एमएसपी में बड़ी वृद्धि का जो फैसला लिया है, वह किसानों के हितों के संरक्षण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का परिचायक है। यह वृद्धि स्वामीनाथन कमीशन की भावना के अनुरूप है।

दरअसल, मोदी सरकार ने किसानों की आमदनी 2022 तक दोगुनी करने के लक्ष्य रखा है। सरकार अब उसी दिशा की ओर बढ़ रही है। ऐसे में कैबिनेट बैठक में यह तय माना जा रहा है था कि रबी फसल की एमएसपी में वृद्धि होना तय है।

समाजवादी पार्टी का ऐलान- बिहार चुनाव में RJD का करेगी समर्थन

लखनऊ, जेएनएन। उत्तर प्रदेश के मुख्य सियासी दलों में शामिल समाजवादी पार्टी (एसपी) बिहार के विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) को समर्थन देगी। इस बात की जानकारी समाजवादी पार्टी ने सोमवार देर रात अपने ऑफिशियिल ट्विटर हैंडल के जरिये दी है। इसके साथ ही पार्टी ने कहा है कि वह गठबंधन नहीं कर रहे हैं, बल्कि राष्ट्रीय जनता दल के उम्मीदवारों का समर्थन करेंगे। बिहार विधानसभा के चुनाव की तारीखों का ऐलान जल्द होने वाला है। इस समय सभी राजनीतिक दल अपनी-अपनी तैयारियों में लग गए हैं। इस चुनाव में असली लड़ाई एनडीए और महागठबंधन के बीच होगी। चुनाव से पहले बिहार में नेता प्रतिपक्ष और आरजेडी के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार तेजस्वी यादव के लिए बड़ी खुशखबरी समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव लेकर आए हैं। समाजवादी पार्टी ने ऐलान किया कि वह बिहार चुनाव में राष्ट्रीय जनता दल के उम्मीदवारों को समर्थन करेंगे। बिहार में राष्ट्रीय जनता दल, कांग्रेस और कुछ अन्य दलों का महागठबंधन है। ऐसे में समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव की पार्टी का राष्ट्रीय जनता दल को समर्थन देना महागठबंधन के लिए एक अच्छा संकेत है। हालांकि बिहार की राजनीति में समाजवादी पार्टी का प्रभाव उतना नहीं है। फिर भी समाजवादी पार्टी कुछ न कुछ फायदा जरूर पहुंचा सकती है। महागठबंधन में शामिल राष्ट्रीय जनता दल, कांग्रेस और अन्य पार्टियों के बीच सीट शेयरिंग को लेकर लगातार बातचीत जारी है।

महाराष्ट्र में ठाणे के भिवंडी में इमारत ढहने से 13 की मौत

राज्य ब्यूरो, मुंबई। महाराष्ट्र में मुंबई से सटे भिवंडी इलाके में तीन मंजिला इमारत अचानक ढह जाने से अब तक 13 लोगों की मौत हो गई है। करीब 20 लोगों को अब भी इमारत के मलबे से निकालने की कोशिश की जा रही है। टेक्सटाइल कारोबार के लिए मशहूर भिवंडी के धामनकर नाके के पास पटेल कंपाउंड की यह तीन मंजिला इमारत रात 3.40 बजे अचानक ढह गई। घटना के तुरंत बाद स्थानीय पुलिस व दमकल विभाग ने स्थानीय लोगों की मदद से राहत कार्य शुरू किया, जिसमें दोपहर तक करीब 20 लोगों के जिंदा निकाल लिया गया था। इनमें एक बच्चा भी शामिल था, लेकिन इमारत की निचली मंजिलों पर रहनेवालों को अधिक जानमाल का नुकसान उठाना पड़ा है।

भिवंडी-निजामपुरा शहर के मनपा आयुक्त डॉ. पंकज आशिया के अनुसार, यह इमारत जर्जर इमारतों की सूची में थी। नगर निगम ने इसे खाली करने की नोटिस दे रखी थी। एक आंकड़े के अनुसार, अकेले भिवंडी कस्बे में 750 से अधिक इमारतें जर्जर एवं खतरनाक घोषित की जा चुकी हैं। लेकिन ज्यादातर में अभी भी लोग रह रहे हैं।

कुछ ही दिनों पहले 25 अगस्त को मुंबई के निकट ही रायगढ़ जनपद में एक पांच मंजिला इमारत ढहने से 13 लोग मारे गए थे। उससे पहले मुंबई के ही कांदीवाली इलाके में इसी वर्ष पांच मई को एक इमारत ढहने से 14 लोग मारे गए थे। दक्षिण मुंबई में भी ऐसी कई इमारतें हैं, जिन्हें रहने के लिए खतरनाक घोषित किया जा चुका है।

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने ट्वीट के जरिये अपनी संवेदना जाहिर करते हुए लिखा कि महाराष्ट्र के भिवंडी इलाके में इमारत गिरने की घटना में जानमाल का नुकसान काफी दुखद है। दुख की इस घड़ी में पीड़ितों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र के भिवंडी में इमारत ढहने से दुखी शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना की। पीएम मोदी ने कहा कि बचाव अभियान चल रहा है और प्रभावितों को हर संभव सहायता प्रदान की जा रही है।

मिली जानकारी के अनुसार जिलानी अपार्टमेंट के नाम से मशहूर ये इमारत साल 1984 में बनी थी इमारत का एक हिस्सा देर रात अचानक ढह गया। ढहने वाले इस हिस्से में 21 फ्लैट हैं जिसमें काफी लोग गहरी नींद में सो रहे थे। सोमवार तड़के 3 बजकर 40 मिनट पर इस हिस्से के ढहते ही पूरे इलाके में कोहराम मच गया स्थानीय लोग तुरंत लोगों की मदद के लिए जुट गये और राहत एवं बचाव कार्य दल को भी सूचित किया गया। तभी से यहां राहत एवं बचाव कार्य लगातार जारी है। घायलों को अस्पताल पहुंचाया जा रहा है। महाराष्ट्र के रायगढ़ में 24 अगस्त को एक पांच मंजिला इमारत के ढहने से 16 लोगों की मौत हो गयी थी। इस इमारत के गिरते ही पूरे इलाके में हाहाकार मच गया। इमारत में 45 फ्लैट थे। यहां मलबे में 200 लोगों के फंसे होने की जानकारी मिली थी। हादसा रायगढ़ जिले के काजलपुरा इलाके में हुआ था।

पारदर्शिता, निष्पक्षता और समयबद्धता के साथ करें भर्तियां : सीएम योगी

लखनऊ, जेएनएन। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राज्य सरकार के अधीन सभी विभागों में रिक्त पदों पर भर्ती की प्रक्रिया को और तेजी से आगे बढ़ाने का निर्देश दिया है। नौकरियों के लिए भर्ती प्रक्रिया को पूरी पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ संचालित करते हुए उन्हें तय समय में पूरा करने का निर्देश दिया है। उन्होंने मुख्य सचिव राजेंद्र कुमार तिवारी और अपर मुख्य सचिव कार्मिक मुकुल सिंघल को प्रत्येक विभाग से रिक्त पदों का प्रामाणिक विवरण प्राप्त कर प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है।

उत्तर प्रदेश में भर्तियों को रफ्तार देने के साथ उन्हें पारदर्शिता के साथ संपन्न कराने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को अपने सरकारी आवास पर विभिन्न भर्ती संस्थाओं/आयोगों/बोर्ड के अध्यक्षों और अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। उन्होंने उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष डॉ.प्रभात कुमार, उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग के अध्यक्ष प्रवीर कुमार, उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग के अध्यक्ष प्रो.ईश्वर शरण विश्वकर्मा, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड के अध्यक्ष बीरेश कुमार, उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड के अध्यक्ष डॉ.आरके विश्वकर्मा और उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड के अध्यक्ष अरविंद कुमार से विस्तृत बातचीत करते हुए इन संस्थाओं में भर्तियों की ताजा स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त की।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि इन भर्ती संस्थाओं के तहत रिक्त पदों पर चयन प्रक्रिया पारदर्शी और समयबद्ध ढंग से पूरा किया जाए। परीक्षाओं को समय से संपन्न कराते हुए उनके परिणाम भी शीघ्र घोषित किए जाएं। चयन परीक्षाओं में कोविड-19 प्रोटोकॉल और शारीरिक दूरी का पूरी तरह पालन किया जाए। भर्ती संस्थाओं के प्रमुखों को आगाह भी किया कि परीक्षाओं को लेकर किसी भी प्रकार की अनियमितता या लापरवाही की गुंजाइश न रहे। पूरी तैयारी के साथ पारदर्शी ढंग से चयन परीक्षाओं को आयोजित किया जाए।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि शीघ्रता के साथ रिक्त पदों का विवरण उपलब्ध कराते हुए उन्हें अधियाचन के लिए भेजा जाए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के युवाओं को नौकरी तथा रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराने के लगातार प्रयास कर रही है जिससे उनका भविष्य उज्ज्वल हो। पिछले तीन वर्षों में तीन लाख से अधिक अभ्यर्थियों को नौकरी दिए जाने पर संतोष व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की मंशा है कि पारदर्शितापूर्ण ढंग से योग्य और अच्छे अभ्यर्थियों का चयन करते हुए विभिन्न विभागों में रिक्त पद शीघ्र भरे जाएं।

बैठक में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को बीते तीन वर्षों के दौरान विभिन्न विभागों में हुई भर्तियों का विवरण दिया गया। उन्हें बताया गया कि मौजूदा सरकार की ओर से पुलिस विभाग में रिक्त पदों के सापेक्ष अब तक की गई 1,37,253 भर्तियां वर्ष 2007 से 2017 के बीच की गई भर्तियों के मुकाबले कई गुना अधिक हैं। बैठक में अपर मुख्य सचिव गृह अवनीश कुमार अवस्थी, अपर मुख्य सचिव वित्त संजीव मित्तल, पुलिस महानिदेशक हितेश चंद्र अवस्थी, अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा मोनिका गर्ग, अपर मुख्य सचिव माध्यमिक शिक्षा आराधना शुक्ला सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

नेपाल में दो किलोमीटर भीतर अंदर घुसा चीन, दोस्त बनकर पीठ में छुरा घोंपा

पिथौरागढ़, जागरण संवाददाता। भारत के प्रति नेपाल को उकसाकर सीमा विवाद को तूल देने वाले चीन ने अब उसके ही पीठ में छुरा घोंप दिया है। नेपाल के हुमला जिले में चीन ने दो किमी भीतर घुसकर स्थायी निर्माण कर लिया है। इतना ही नहीं चीनी सैनिकों ने नेपाल का पिलर नंबर 11 भी उखाड़ दिया है। नेपाल से मिली जानकारी के अनुसार, हुमला जिले में चीन दस साल से सक्रिय था। इस बीच उसने नाम्खा गांव पालिका के छह नंबर वार्ड लिमी के लाप्चा गांव में दो किमी अंदर घुस कर एक साथ नौ मकान बना लिए हैं।

नाम्खा गांव पालिका के अध्यक्ष विष्णु बहादुर लामा ने बताया कि चीन ने नेपाली सरकार की अनुमति के बिना ही उनकी गांव की सीमा में दखल देते हुए भवन निर्माण कर किया है। लामा ने बताया कि वर्ष 2010 में लिमी से लाप्चा तक सड़क निर्माण के समय ही चीन ने तीन मकान बना दिए थे। अब चीनी सैनिकों ने नए निर्माण किए हैं और नेपाली नागरिकों को धमकाकर लौटा दे रहे हैं। उन्होंने बताया कि इसकी सूचना स्थानीय प्रशासन के साथ ही नेपाल सरकार को भी दे दी गई है। हुमला के जिलाधिकारी चिरंजीवी गिरी ने चीनी अतिक्रमण की जांच के लिए संयुक्त टीम गठित कर दी है। इसमें वह खुद और नेपाली सेना के अधिकारी, नेपाल पुलिस, नेपाली सशस्त्र बल, नेपाल खुफिया विभाग और गांव पालिका के अध्यक्ष शामिल हैं। टीम रिपोर्ट बनाकर सरकार को भेजेगी।

नेपाल के कणार्ली प्रदेश का हुमला जिला चीन सीमा से लगा अति दुर्गम क्षेत्र है। यहां के लोग शारीरिक रूप से बेहद मजबूत होते हैं। यहां के घोड़े विशेष माने जाते हैं। नवंबर में भारत-नेपाल सीमा पर जौलजीबी में लगने वाले मेले में हुमला के घोड़े बिकने आते हैं। इनकी भारत में विशेष मांग रहती है।

नमामि देवी नर्मदे योजना घोटाला : क्षमता थी 10 लाख पौधे तैयार करने की, खरीदे 37 लाख

भोपाल, अभिषेक दुबे। मध्य प्रदेश की 'नमामि देवी नर्मदे योजना' में पौधों की खरीदी में हुआ घोटाला प्रदेशव्यापी होता जा रहा है। योजना में निजी नर्सरियों के संचालकों के साथ मिलकर उद्यानिकी विभाग के अफसरों ने जमकर फजीवाड़ा किया। जिन नर्सरियों की क्षमता 10 लाख पौधे तैयार करने की थी, उनसे 37 लाख पौधे विभाग ने खरीद लिए। इसका करीब 15 करोड़ रुपये का भुगतान भी कर दिया गया। केंद्र सरकार के उपक्रम एनएचबी (नेशनल हार्टिकल्चर बोर्ड) में रजिस्टर्ड नहीं होने के बावजूद उद्यानिकी विभाग ने कई नर्सरियों से पौधा खरीदी की। एमपी एग्रो की स्वीकृत दरों से महंगी कीमतों में यह खरीदी की गई। पौधे खरीदी के लिए बनी कमेटी के तत्कालीन सदस्य एमपीएस बुंदेला ने फजीवाड़े की शिकायत हाल ही में विभागीय मंत्री से लेकर अधिकारियों से की थी। इसके बाद घोटाला सामने आया।

गौरतलब है कि वर्ष 2018-19 में 40 करोड़ रुपये की राशि से मप्र में इस प्रोजेक्ट के तहत एक करोड़ पौधे खरीदने का लक्ष्य रखा गया था। इस राशि से फलदार पौधे जैसे- आम, संतरा, नींबू, अमरूद आदि के पौधे खरीदे जाने थे। बाद में विभाग ने 37 लाख पौधे ही खरीदे। उद्यानिकी विभाग के तत्कालीन मंत्री सूर्यप्रकाश मीणा के अनुमोदन से पौधे खरीदी के लिए अधिकारियों की 7 सदस्यीय कमेटी बनी थी। खरीदी के पूरा कर्ता-धर्ता कमेटी के सदस्य विभाग के उपसंचालक राजेंद्र कुमार राजौरिया थे। टेंडर की मुख्य शर्त थी कि जिस नर्सरी से फलदार पौधों की खरीदी की जाएगी, उसका एनएचबी या राज्य के नर्सरी अधिनियम में पंजीयन होना अनिवार्य था, लेकिन अधिकांश खरीदी ऐसी नर्सरियों से की गई जो राज्य से लेकर केंद्र सरकार की किसी भी संस्था में पंजीकृत नहीं थीं। इसी तरह का घोटाला हाल ही में जबलपुर में भी सामने आया था।

सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला, कहा- लोकतंत्र में संसद व सड़कों पर हो सकता है विरोध प्रदर्शन

नई दिल्ली, प्रेट्र। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को कहा कि संसदीय लोकतंत्र में संसद में और सड़कों पर विरोध प्रदर्शन हो सकता है, लेकिन सड़कों पर इसे शांतिपूर्ण होना चाहिए। विरोध प्रदर्शनों को लेकर कोई सार्वभौमिक नीति नहीं हो सकती क्योंकि हर मामले में परिस्थितियां अलग-अलग हो सकती हैं। दिल्ली के शाहीन बाग में पिछले साल नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) विरोधी प्रदर्शनों के खिलाफ दायर याचिकाओं पर फैसला सुरक्षित रखते हुए जस्टिस एसके कौल, जस्टिस अनिरुद्ध बोस और जस्टिस कृष्ण मुरारी की पीठ ने उक्त टिप्पणी की। कोरोना महामारी के डर और उसके प्रोटोकॉल के अनुपालन में बाद में वहां स्थिति सामान्य हो गई थी।

पीठ ने कहा कि कुछ ऐसी परिस्थितियां थीं जो परिदृश्य में आ गई थीं और यह किसी के हाथ में नहीं थीं। फिर भगवान ने खुद हस्तक्षेप किया। शशांक देव सुधि समेत वकीलों की दलीलों का संज्ञान लेते हुए पीठ ने कहा, 'हमें विरोध के अधिकार और सड़कों को अवरुद्ध करने के बीच संतुलन स्थापित करना होगा। हमें इस मसले से निपटना होगा। इसके लिए कोई सार्वभौमिक नीति नहीं हो सकती क्योंकि मामले दर मामले के आधार पर हालात अलग-अलग हो सकते हैं।' याचिका दायर करने वाले एक अधिवक्ता अमित साहनी ने कहा, 'जनहित में इस तरह के विरोध प्रदर्शनों की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए थी। इसे सौ से ज्यादा दिनों तक जारी रहने की अनुमति दी गई और लोगों को मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इस तरह की घटना नहीं होनी चाहिए थी। कल हरियाणा में चक्का जाम था। उन्होंने 24-25 सितंबर को भारत बंद का भी आह्वान किया है।'

केंद्र की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि विरोध का अधिकार पूर्ण अधिकार नहीं हो सकता और इसको लेकर कुछ फैसले भी हैं।

सीबीआइ टीम करेगी जांच ब्यौरे को लेकर कल अहम बैठक, खुलने वाला है मौत का राज !

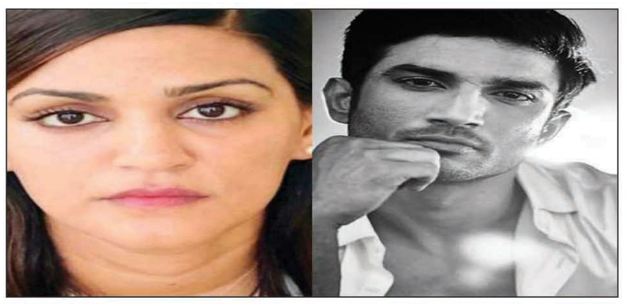

नई दिल्ली, आइएएनएस। बॉलीवुड अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की मौत के मामले में लगातार अहम मोड़ आ रहे हैं। इस बीच सीबीआइ और एम्स की टीमें लगातार इस मामले की जांच में जुटी रही हैं। आखिर सुशांत सिंह राजपूत की मौत एक आत्महत्या थी या हत्या- सीबीआइ की टीम इसकी पड़ताल के लिए लगातार मामले की जांच में जुटी रही है। इस बीच, कल यानि मंगलवार को सीबीआइ और एम्स की टीम के बीच एक अहम मुलाकात होने वाली है। इस बैठक में सुशांत सिंह राजपूत की मौत से जुड़े जांच के ब्यौरे पर दोनों टीमें चर्चा करेंगी।

समाचार एजेंसी आइएएनएस ने सूत्रों के हवाले से सोमवार को बताया कि अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की मौत की जांच कर रही केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई), एम्स (AIIMS) के मेडिकल बोर्ड के साथ मंगलवार को एक अहम बैठक करेगी। सूत्रों के मुताबिक, इस बैठक के दौरान केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) और सीएफएसएल टीमों द्वारा की गई जांच के निष्कर्षों पर चर्चा की जाएगी। गौरतलब है कि सीबीआइ की टीम ने सुशांत सिंह राजपूत की मौत की जांच लगातार मुंबई में रहकर की है।

सीबीआइ सूत्रों के अनुसार, ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की फोरेंसिक टीम, एजेंसी के विशेष जांच दल की टीम के सदस्यों से दक्षिण दिल्ली के लोधी रोड इलाके में अपने मुख्यालय में मुलाकात करेगी। सूत्र ने कहा कि सीबीआइ और सीएफएसएल की एसआईटी की रिपोर्ट का अध्ययन करने के बाद एम्स मेडिकल बोर्ड अपने अंतिम निष्कर्ष को साझा करेगा कि क्या अभिनेता की सुशांत सिंह राजपूत की मौत के मामले में कोई सच छिपाया जा रहा है। सूत्र ने कहा कि सीबीआइ अपने जांच ब्यौरे को एम्स की फोरेंसिक टीम के साथ भी साझा करेगी और फिर अगली कार्रवाई के बारे में फैसला करेगी।

6 अगस्त को सुशांत की मौत के मामले को संभालने के बाद उइक की टीम ने अक्कटर की फोरेंसिक टीम में क्राइम सीन रिक्रिएशन द्वारा तैयार की गई पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट का अध्ययन करने और संघीय एजेंसी का मार्गदर्शन करने के लिए अपनी भूमिका निभाई थी। डॉ. सुधीर गुप्ता की अगुआई वाली AIIMS की फोरेंसिक टीम ने एक मेडिकल बोर्ड का गठन किया और टीम ने सुशांत के बांद्रा फ्लैट का दौरा किया और क्राइम सीन को भी रीक्रिएट किया। सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिवंगत अभिनेता की मौत की सीबीआई से जांच कराने की इजाजत मिलने के एक दिन बाद सीबीआई की टीम फोरेंसिक टीम के साथ मुंबई गई थी। यह टीम लगभग एक महीने तक मुंबई में रही। सीबीआई की टीम ने मुंबई में रहने के दौरान सुशांत की प्रेमिका रिया चक्रवर्ती, उसके भाई शोमिक, पिता इंद्रजीत, उसके घर के मैनेजर सैमुअल मिरांडा, फ्लैटमेट सिद्धार्थ पिठानी, पूर्व सेलिब्रिटी मैनेजर श्रुति मोदी, प्रतिभा प्रबंधक जया साहा, व्यक्तिगत स्टाफ नीरज सिंह, केशव बच्चन, दीपेश सावंत और कई अन्य के बयान दर्ज किए। सीबीआई की टीम ने मुंबई में सुशांत की बहन मीतू सिंह, और उनके पिता के के सिंह और बड़ी बहन रानी सिंह का भी बयान दर्ज किया।

संक्षेप समाचार

सीएचसी करछना में 45 लोगों की हुई कोरोना जांच

करछना। सोमवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र करछना में 45 लोगों की कोरोना की जांच हुयी जिनमे एक व्यक्ति की रिर्पोर्ट पाजटिव आईए स्वास्थ्यकर्मियों ने कहा कि लोग संक्रमण से बचने के लिए मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें जिससे इस पर रोक लोग सके और लोगो को संक्रमण होने से बचाया जा सके।

जिला उपाध्यक्ष के मां के निधन पर मनकामेश्वर मंडल अध्यक्ष ने शोक ब्यक्त किया

लालापुर। भारतीय जनता पार्टी यमुनापार जिला उपाध्यक्ष व पिछला मोर्चा के जिलाध्यक्ष ज्ञान सिंह पटेल के माता के निधन पर मनकामेश्वर मंडल वंदना सिंह जिला प्रतिनिधि शंकर लाल पांडे व मनकामेश्वर मंडल के सभी सदस्य ने शोक संवेदना व्यक्त किया है। जिला मंत्री की माता प्रयागराज के एक निजी हास्पिटल मे इलाज चल रहा था। उक्त जानकारी भाजपा यमुनापार जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुवेर्दी ने मनकामेश्वर मंडल मीडिया प्रभारी दीपक पांडे को दी।

इफको में कार्य करने गए मजदूर की अचानक तबीयत बिगड़ने से हुई मौत

इफको ठेका मजदूर संघ ने पुलिस में तहरीर देकर की आवश्यक कारवाई करने की मांग

फूलपुर। रोज की तरह काम करने गए मजदूर की अचानक तबीयत बिगड़ी तो साथ काम करने वाले मजदूरों की सूचना पर उसे अस्पताल ले जाया गया जहां उसकी मौत हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया।

सराय इनायत थाना अंतर्गत कसेरूआ कला गांव निवासी तेज बहादुर 40 पुत्र गंगादीन इफको में मजदूरी करता था। सोमवार दोपहर को वह इफको कॉलोनी परिसर से अपने साथ अन्य मजदूरों को लेकर सराय अब्दुल मलिक गांव में ट्रैक्टर से जैविक खाद लादने गया था। साथी मजदूरों ने बताया कि खाद लादने के बाद वह अचानक अचेत हो गया तो उसे तत्काल इफको चिकित्सालय ले जाया गया जहां उसकी मौत हो गई। सूचना पर पहुंचे इफको ठेका मजदूर संघ के सैकड़ों मजदूरों ने मृतक मजदूर के शव को रखकर परिजनों को आर्थिक सहायता दिए जाने की मांग करने लगे। इफको ठेका मजदूर संघ के अध्यक्ष देवानंद भारती ने बताया कि संगठन के साथियों ने इफको से मृतक के परिजनों के लिए दस लाख मुवावजे की मांग की गई। जिसे इफको प्रबन्धन ने अस्वीकार कर दिया। उन्होंने इफको प्रबंधन पर आरोप लगाते हुए कहा कि अगर समय रहते मजदूर का इफको में इलाज हुआ होता तो उसकी जान बच सकती थी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया। वहीं इफको ठेका मजदूर संघ ने पुलिस में तहरीर देकर आवश्यक कार्रवाई करने की मांग की। घटना से परिजनों का रो रोकर बुरा हाल था। परिजनों ने बताया कि मृतक इफको में मजदूरी कर किसी तरह अपने परिवार का भरण-पोषण करता था।

मौत के बाद कार्रवाई की मांग करते मजदूर

हाईकोर्ट समाचार

शुगर कंपनी से किसानों के करोड़ों के बकाये का भुगतान कराने का निर्देश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बजाज हिन्दुस्तान शुगर लिमिटेड कंपनी रूदौली, बस्ती के खिलाफ किसानो के करोडों रुपए बकाया गन्ना मूल्य की दो माह में वसूली का निर्देश दिया है। कोर्ट ने कहा है कि जिलाधिकारी बस्ती किसानो के बकाया भुगतान कराने के लिए कंपनी के डायरेक्टर व जिम्मेदार अधिकारियो के गिरफ्तारी सहित कठोर कार्यवाही करे। कोर्ट ने कहा है कि कानून के तहत गन्ना किसानों को गन्ना आपूर्ति के 15 दिन के भीतर गन्ना मूल्य का भुगतान मिल जाना चाहिए। इसके बाद भुगतान पर 12 फीसदी व्याज की अदायगी का नियम है। कोर्ट ने कहा है कि याची किसानो को गन्ना मूल्य का भुगतान पाने का विधिक अधिकार है। यह आदेश न्यायमूर्ति एस पी केशरवानी तथा न्यायमूर्ति जयंत बनर्जी की खंडपीठ ने कनिक राम व अन्य की याचिका पर दिया है। याचीगण गन्ना उत्पादक किसान है। मामले के अनुसार याची किसानों ने 2019-20 पेराई सत्र में सहकारी गन्ना समिति के मार्फत कंपनी को गन्ने की आपूर्ति की। किसानो का गन्ना कंपनी ने खरीदा और केवल कुछ किसानो का ही भुगतान किया गया है। 20447 किसानों को एक पैसे का भुगतान नही किया गया है। कुल 132ऽ5194 करोड मे से 19ऽ6035 करोड़ का भुगतान किया गया है। 113ऽ9159 करोड़ रुपए कम्पनी पर बकाया है। कोर्ट ने वसूली नोटिस पर कडाई से अमल कर भुगतान कराने का राज्य सरकार व जिलाधिकारी बस्ती को निर्देश दिया है।

माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाचार्यो के चयन परिणाम घोषित करने की मांग में याचिका

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयो के प्रधानाचार्यो की 2011 की भर्ती में साक्षात्कार के बाद चयन परिणाम घोषित करने की मांग को लेकर दाखिल याचिका पर चयन बोर्ड के रवैये पर नाराजगी व्यक्त की है। कोर्ट ने कहा है कि हाईकोर्ट की खंडपीठ ने 21 जनवरी 14 से 26 फरवरी 14 तक हुए साक्षात्कार को विधि संम्मत माना है। सचिव-उप सचिव उ प्र माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड का 6 मार्च 20 का आदेश कोर्ट की अवहेलना करने वाला है। कोर्ट ने राज्य सरकार व बोर्ड को आदेश संशोधित करने का समय दिया है और चेतावनी दी है कि यदि ऐसा नही किया गया तो अवमानना की कार्यवाही जायेगी। यह आदेश न्यायमूर्ति एम सी त्रिपाठी ने दीपक भाटिया व अन्य की याचिका पर दिया है। याचिका पर अधिवक्ता का कहना है कि सरकार ने स्वयं ही हलफनामा दाखिल कर कहा है कि 21जनवरी से 26 फरवरी 14 तक हुए साक्षात्कार सही है। 2जून से 3 जुलाई 14 तक हुए साक्षात्कार 26 जून 14 के शासनादेश से निरस्त हो चुके है।27अप्रैल 15 से 6 मई15 तक हुए साक्षात्कार बोर्ड के चेयरमैन के इस्तीफे के कारण स्थगित है।18 मई15 से 26 जून 15 तक साक्षात्कार लिये गये हैं। कोर्ट के आदेश पर कानपुर का स्थगित है। याची अधिवक्ता का कहना है कि जब खंडपीठ ने कहा है कि 21 जनवरी 14 से 26 फरवरी 14 के बीच हुए साक्षात्कार पर विवाद नही है। और याची इसी श्रेणी के अभ्यर्थी है तो परिणाम को घोषित न करना कोर्ट की अवहेलना है। याचिका में मेरठ,मुरादाबाद व फैजाबाद परिक्षेत्र के इस साक्षात्कारों के परिणाम घोषित करने की मांग की गयी है।

हरिजन बस्ती पर हमले के आरोपी की रासुका में निरूद्धि को चुनौती, सरकार से मांगा जवाब

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने जौनपुर के सराय बक्सा थाना क्षेत्र में आम तोड़ने के विवाद पर हरिजन मुस्लिम साम्प्रदायिक झगडे. में लगाई गई रासुका निरूद्धि के खिलाफ याचिका कर राज्य सरकार से तीन हफ्ते में जवाब मांगा है। याचिका की अगली सुनवाई 12 अक्तूबर को होगी। यह आदेश न्यायमूर्ति प्रीतिंकर दिवाकर तथा न्यायमूर्ति सुभाष चंद्र शर्मा की खंडपीठ ने जावेद सिद्दीकी की बंदीप्रत्यक्षीकरण याचिका पर दिया है । मालूम हो कि मुस्लिमों द्वारा हरिजन बस्ती पर हमला करने के बाद 37 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। याची को भी 10 जून को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। इन पर गिरोहबंद कानून लगाया गया है। याची अधिवक्ता का कहना है कि याची को जमानत मिलने के बाद जिलाधिकारी ने 10 जुलाई को रासुका लगा दी। जिसे चुनौती दी गयी है। याची अधिवक्ता का कहना है कि याची का कोई आपराधिक इतिहास नही है। जमानत मिलने पर छूटने से रोकने के लिए रासुका लगायी गयी है। याची को मांगे गये दस्तावेज नहीं दिये जा रहे हैं। इस आधार पर निरूद्धि रद्द की जाय। दोनो पक्षों को सुनकर कोर्ट ने राज्य सरकार से जवाब मांगा है।

हाईकोर्ट में समस्याओं को लेकर एडवोकेट्स एसोसिएशन ने चीफ जस्टिस को लिखा पत्र

प्रयागराज। हाईकोर्ट में मुकदमों की लिसि्ंटग, खुली अदालत में सुनवाई से बढ़ रहे संक्रमण के खतरे जैसी तमाम समस्याओं को लेकर एडवोकेट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष ने मुख्य न्यायमूर्ति को पत्र लिखा है। पत्र में वकीलों के सामने आ रही तमाम कठिनाइयों का जिक्र किया गया है। साथ ही संक्रमण के बढ़ते खतरे के मद्देनजर उपाय किए जाने की मांग की गई है। एसोसिएशन के अध्यक्ष ए डी सांडर्स द्वारा लिखे पत्र में कहा गया है कि मुकदमों की फिजिकल और ई फाइलिंग की अनुमति दी गई है। इन दोनों माध्यमों से बढ़ी संख्या में मुकदमे दाखिल हो रहे हैं। मगर वकीलों के फ्रेश मुकदमों की लिसि्ंटग डेढ़ महीने बाद भी नहीं हो पा रही हैं। वहीं तमाम ऐसे मुकदमे हैं जो तीन चार दिन में ही लिस्ट पा जाते हैं। वकीलों को यह नहीं पता होता कि उनका मुकदमा कब लिस्ट पर आएगा। मांग की गई है कि नए दाखिल होने वाले मुकदमों में टोकन नंबर दिया जाए। पत्र में कहा गया है कि मुकदमों की वीडियो कांफ्रेंसिंग से सुनवाई को वरीयता दी जाए। क्योंकि खुली अदालत में सुनवाई होने से परिसर में भीड़ ज्यादा हो जा रही है। कॉरिडोर और न्यायकक्षों में बड़ी संख्या में वकील आ जाते हैं जिससे शारीरिक दूरी का पालन नहीं हो पा रहा है। ऐसे में संक्रमण का खतरा बहुत बढ़ गया है। कहा गया है कि व्यवस्था की गई थी कि जिन वकीलों का मुकदमा लगा है उन्हीं को भीतर जाने दिया जाएगा। मगर इस व्यवस्था का पालन नहीं हो रहा है। गेट पर किसी की जांच भी नहीं हो रही है। इससे कैंपस के भीतर काफी भीड़ हो जाती है। एसोसिएशन का यह भी कहना है कि फ्लाईओवर के नीचे वकीलों, वादकारियों, वेंडर्स आदि की बहुत भीड़ इकट्ठा हो रही है इससे भी संक्रमण फैलने का खतरा है। एसोसएिशन ने मांग की है कि ज्यादा से ज्यादा मुकदमों की सुनवाई वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए ही की जाए। एसोसिएशन का कहना है कि वीडियो कांफ्रेंसिंग का समय हर अदालत का अलग- अलग है। इससे वकीलों को परेशानी होती है। सभी अदालतों के लिए वीडियो कांफ्रेंसिंग हेतु एक निश्चित समय तय किया जाए। वीडियो लिंक मिलने में हो रही दिक्कतों को भी दूर करने की मांग की गई है। एसोसिएशन ने वकीलों के चैंबर खोलने की मांग की है जिससे कि कॉरिडोर और कोर्ट रूम के भीतर भीड़ होने से रोका जा सके। अधिवक्ता अपने मुकदमों की सुनवाई होने तक अपने चैंबर में ही रूक कर इंतजार कर सकें।

हाईकोर्ट में कोरोना मामले में सुनवाई 23 को

प्रयागराज। कोरोना संकट से निपटने के सरकार के प्रयासों की मॉनिटरिंग कर रही हाईकोर्ट की खंडपीठ ने इस प्रकरण पर 23 सितंबर को सुनवाई करने का निर्देश दिया है। सोमवार को इस मामले में नगर निगम के अधिवक्ता ने कोर्ट के आदेश के अनुपालन की रिपोर्ट हफनामे के साथ दाखिल की। अधिवक्ता वीसी श्रीवास्तव ने भी एक हलफनामा दाखिल किया है। मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा और न्यायमूर्ति अजीत कुमार की पीठ कर रही है। कोर्ट ने इससे पूर्व नगर निगम और जिला प्रशासन व पुलिस को संक्रमण की स्थिति से निपटने के लिए व्यापक निर्देश दिए हैं। वार्डों की निगरानी के लिए एडवोकेट कमिश्नर भी नियुक्त किए हैं जो अदालत को हालात की सही जानकारी देंगे।

बेरोजगारी को लेकर सपाइयों ने किया जोरदार प्रदर्शन

प्रदेश के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव जी के दिशा निर्देश अनुसार सरकार के खिलाफ किया गया धरना प्रदर्शन

हंडिया। हंडिया तहसील परिसर में राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के दिशा निदेर्शानुसार पूरे प्रदेश में मौजूदा सरकार की तानाशाही रूपीरूपी व्यवस्था,बढ़ती महंगाई, और बेरोजगारी,युवाओं के साथ हो रहे अन्याय, बढ़ते अपराध, भ्रष्टाचार तथा अन्नदाता के शोषण को रोकने के संबंध में 21 सितंबर 2020 सुबह 11:00 बजे तहसील हंडिया प्रयागराज में माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष, माननीय प्रदेश अध्यक्ष, माननीय जिला अध्यक्ष के आवाहन पर छात्र-छात्राओं, महिलाओं, व देश में महंगाई, लूट, अत्याचार के विरोध में समाजवादी कार्यकर्ता इकट्ठे होकर धरना प्रदर्शन किए। इस धरना प्रदर्शन को रोकने के लिए कई थानों की फोर्स मौजूद थी लेकिन समाजवादी कार्यकताओं ने पीछे हटने का नाम नहीं लिया। योगी तेरी तानाशाही नहीं चलेगी नहीं चलेगी, पुलिस प्रशासन की गुंडागर्दी नहीं चलेगी नहीं चलेगी, जब जब योगी डरता है पुलिस को आगे करता है, योगी सरकार मुदार्बाद, समाजवादी पार्टी जिंदाबाद, अखिलेश यादव जिंदाबाद का नारा लगाते हुए आगे बढ़ते रहें इस बीच पुलिस प्रशासन इन्हें रोकने के चक्कर में काफी प्रयास किए जिसमें की संख्या में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता मौजूद ।

बेरोजगारी को हंडिया तहसील परिसर में प्रदर्शन करते सपा कार्यकर्ता व एसडीएम को ज्ञापन सौंपते हुए

हंडिया में सपाइयों ने मुख्यमंत्री का पुतला

सोमवार को दोपहर 11:00 बजे के करीब सैकड़ों सपाइयों का हुजूम सरकार विरोधी नारे लगाते हुए धीरे-धीरे तहसील परिसर पहुंचे आधे सफाई तहसील परिसर के अंदर ही जा पाए थे कि तभी पुलिस प्रशासन द्वारा तहसील गेट बंद करवा दिया गया जिसके चलते आधे सफाई गेट के बाहर ही रह गए जहां से सपाइयों ने सरकार विरोधी नारे लगाने शुरू कर दिए तभी दर्जनों की संख्या में सफाई कार्यकर्ता मुख्यमंत्री का पुतला लेकर पहुंच गए और तहसील गेट के सामने ही फूंक दिया साथ ही साथ जमकर मुदार्बाद के नारे भी लगाए पुलिस प्रशासन ने किसी तरह से पुतले को बुझाया और प्रदर्शन कर रहे सपाइयों को गेट के पास से हटाया।

विभिन्न मांगों को लेकर तहसील मुख्यालय पर सपाइयों ने किया प्रदर्शन

शंकरगढ़। पूर्व मुख्यमंत्री व सपा मुखिया अखिलेश यादव के आह्वान पर सपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने बारा तहसील मुख्यालय पर सोमवार को जोरदार प्रदर्शन किया। भाजपा सरकार की नीतियों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और उपजिलाधिकारी बारा गौरव रंजन श्रीवास्तव को महामहिम राज्यपाल महोदया के नाम से ज्ञापन सौंपा। सपा कार्यकताओं ने केंद्र सरकार द्वारा लाए गए कृषि विधेयक को किसान विरोधी करार दिया। कहा कि यह विधेयक किसानों के हित में नहीं है। इससे जमीनदारी युग की शुरूआत होगी। सपा कार्यकताओं ने सूबे की ध्वस्त कानून व्यवस्था पर निशाना साधते हुए बेरोजगारी और निजीकरण के मुद्दे पर भी सरकार को घेरा। सपा नेताओं ने कहा कि बेरोजगारी चरम पर है और सरकार सरकारी संस्थानों का निजीकरण करने पर तुली हुई है। देश में कोरोना संक्रमण की संख्या भी लगातार बढ़ती जा रही है।स्वास्थ्य सुविधा की लचर व्यवस्था से हर कोई आजिज है। तकरीबन घंटे भर के प्रदर्शन के बाद सपाइयों ने बारा विधानसभा अध्यक्ष द्वारिका सिंह पटेल की अगुवाई में उपजिलाधिकारी बारा को विभिन्न मांगों से संबंधित ज्ञापन सौंपा। प्रदर्शन में बारा विधानसभा अध्यक्ष द्वारिका सिंह पटेल, अजय भारती उर्फ मुन्ना भैया पूर्व प्रत्याशी बारा, कामद प्रताप सिंह, सचिन वैश्य, पूर्व ब्लाक प्रमुख गुलाब कली, भागीरथी बिंद, मोहन लाल यादव, मुलायम सिंह यादव, लाल साहब, विजय बागी, विरजेश यादव, प्रमोद सिंह, शैलेंद्र सिंह आदि लोग रहे।

बारा तहसील मुख्यालय पर प्रदर्शन करते सपाई

रिश्वत ले रहे एडीओ पंचायत पर डीपीआरओ मेहरबान

हंडिया। क्षेत्र के सैदाबाद ब्लॉक में तैनात सहायक विकास अधिकारी मणिकांत उपाध्याय को रिश्वत लेने का दुसरा विडियो भी वायरल हुआ। सहायक विकास अधिकारी द्वारा प्रधानो से रिश्वत लेने की खबर अखबारो मे खबर प्रकाशित होने के बाद पुरे जिले मे हडकंप मच गया।बौखलाए सहायक विकास अधिकारी मणिकांत ने पत्रकार पर फर्जी मुकदमा लिखवाने की धमकी दे दी। जब की दुसरे विडियो मे प्रधान 4 हजार दे रहा है। लेकिन सहायक विकास अधिकारी कह रहे है। की मेरे जेब मे नही जायेगा आप पुरे 7 हजार लाओ जब कुछ पत्रकारो ने सहायक विकास अधिकारी मणिकांत से रिस्वत लेने की बात पुछा तो साहब ने कहा की यह पैसा मेरे पास नही आयेगा जिले मे जायेगा।सहायक विकास अधिकारी ने यह भी बताया की जिले मे सहायकों को बैठने की जगह कम है। इस लिये मुख्य विकास अधिकारी साहब के आदेश पर मुख्य विकास अधिकारी के आफिस के बगल मे आफिस बनाने के लिए सभी प्रधानो से सात-सात हजार लेने का आदेश आया है। ये जिमेदारी हमे मिली है। इस लिये पैसा ले रहा हू।इसी बात को लेकर सहायक विकास अधिकारी कुछ प्रधानो को लेकर जिले के जिम्मेदार डी पी आर ओ रेनू श्रीवास्तव के पास गये डी पी आर ओ ने बिना पूरी जांच किये बिना सहायक विकास अधिकारो को बचाने मे कोई कसर नही छोड़ रही है। जिले के जिम्मेदार डी पी आर ओ ने फोन पर पत्रकारो पर मै मुकदमा जरुर लिखवाने की धमकी दी। एडीओ पंचायत को बचाने के चक्कर मे कहा की पत्रकार फर्जी आर टी ओ बनकर वसूली किये है।और जेल भी गये है ।जब की डी पी आर ओ बेबुनियाद बाते कर रही है।जब कि आज तक किसी भी पत्रकार के ऊपर ऐसा आरोप नही लगा।न ही कोई एफआईआर दर्ज हैं। अब देखना है क्या जिले के अधिकारी रिश्वत खोर सहायक विकास अधिकारी पर कब करवाई करते है । क्यो की जिले के अधिकारी के नाम पर फर्जी तरीके से ली जा रही रिश्वत।फिर भी अधिकारी चुप्पी साधे हुए हैं।

रेलवे ट्रैक पर मिला वृद्ध का क्षत-विक्षत शव, नहीं हो पाई पहचान

शंकरगढ़। थाना क्षेत्र के तालापार के समीप रेल की पटरी पर सोमवार की सुबह एक वृद्ध व्यक्ति की लाश मिली। सूचना पर शंकरगढ़ पुलिस मौके पर पहुंची और शव का शिनाख्त करने का प्रयास किया, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। बाद में शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बता दें कि सोमवार की सुबह शंकरगढ़ पुलिस को रेलवे स्टेशन मास्टर ने सूचना दी कि थाना क्षेत्र के तालापार गांव के समीप रेल की पटरी पर एक 60 वर्षीय अज्ञात वृद्ध की लाश पड़ी है। जिस पर थानाध्यक्ष राजेश उपाध्याय एवं कस्बा इंचार्ज अमित कुमार सिंह मौके पर पहुंचे और देखा कि एक 60 वर्षीय वृद्ध व्यक्ति की लाश क्षत-विक्षत अवस्था में पडी है। जिसका दाहिना हाथ व कई अंग कट गया था. फिलहाल समाचार लिखे जाने तक वृद्ध व्यक्ति की शिनाख्त नहीं हो पाई थी। परंतु पास की झाड़ी में उसका जूता काले रंग का व उसकी लुंगी पड़ी हुई थी । फिलहाल शंकरगढ पुलिस ने बॉडी को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया है।

पन्द्रह देशी बमों के साथ चार गिरफ्तार

नैनी। कोतवाली पुलिस ने सोमवार को अलग अलग स्थानों से चार लोगों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से पन्द्रह देशी बम बरामद करते हुए चालान कर दिए। पुलिस के मुताबिक नैनी कोतवाली के पीडीए कालोनी स्थित वाटर पार्क के समीप सब इंसपेक्टर अमित कुमार ने औद्योगिक क्षेत्र के महुवारी गांव निवासी अनिल सिंह पुत्र स्वाः अमृत लाल, आईटीआई कम्पनी के गेट के समीप रहने वाले शिव कुमार पुत्र कल्लन व नैनी के मानस नगर निवासी बल्लू सोनकर पुत्र राकेश सोनकर को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से ११ देशी बम बरामद किया। इसी प्रकार सरपतहिया रोड के समीप औद्योगिक क्षेत्र के रामपुर गांव निवासी रहीम खान पुत्र जलालुद्दीन को चार देशी बम के साथ पीडीए पुलिस चौकी प्रभारी पंकज कुमार सिंह ने गिरफ्तार कर लिया। पकडे गये सभी आरोपियो के खिलाफ पुलिस ने कानूनी कार्यवाई करते हुए चालान कर दिए।

राष्ट्रीय संपत्तियों को कौड़ियों के दाम न बेचे सरकार : जन अधिकार पार्टी

खीरी। भागीदारी संकल्प मोर्चा के तत्वाधान में जन अधिकार पार्टी एवं जनता क्रांति पार्टी के कार्यकर्ताओं ने पूर्व की तरह इस सोमवार को भी कोराओं उप जिलाधिकारी के को रोना संक्रमण होने से होम कोरेन टाई न रहने के कारण कोरांव तहसीलदार अनीता शेखर को 14 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा। जिसमें प्रमुख मांगो में केंद्रीय सरकार द्वारा राष्ट्रीय संपत्ति को निजी क्षेत्र की कंपनियों और उद्योगपतियों को कौड़ियों के दाम बेचा जा रहा है । इससे राष्ट्र की अपूर्ण क्षति होगी । जिसे तत्काल रोका जाए। डीजल- पेट्रोल के बढ़ती मांगों को तत्काल कम किया जाए। प्राइवेट स्कूलों में शिक्षण कार्य रहे शिक्छकों को लॉकडाउन के दौरान सरकार द्वारा गुजारा भत्ता दिया जाए। वही लॉकडाउन के दौरान मजदूरों को 15000 एकमुश्त व साडे 7500 मासिक किया जाए तथा छोटे व गरीब किसान, व्यापारियों को भी छोटे-छोटे कर्ज व बिजली का बिल माफ किया जाए। गन्ना किसानों का बेंचे गए ग न्नो का भुगतान तत्काल किया जाए। गरीबों, दलितों, अल्पसंख्यक, पिछड़ों पर जोर जबरदस्ती जुलुम बंद किया जाए। जुल्म कर रहे आरोपियों को चिन्हित कर तत्काल कार्यवाही किया जाए। नारीबारी- कोरा व मुख्य मार्ग पर टोंस नदी पर बना हुआ पुल को जो कि जर्जर व क्षतिग्रस्त हो चुका है उसे तत्काल नया बनाया जाए। जिससे जमुनापार क्षेत्रों का विकास सुनिश्चित हो सके। उपरोक्त ज्ञापन देने के दौरान जिला महासचिव किसान प्रकोष्ठ नंदलाल सिंह महेश विधानसभा प्रभारी लालचंद रमेश चंद्र कुशवाहा एडवोकेट एडवोकेट समेत कई लोग मौजूद रहे।

तहसीलदार को ज्ञापन सौंपते जन अधिकार पार्टी के कार्यकर्ता

प्रयागराज हलचल

संक्षेप समाचार

अज्ञात शव मिलने से मचा हड़कंप

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के नए यमुना ब्रिज के नीचे सोमवार सुबह एक अज्ञात युवक का शव मिलने से हड़कंप मच गया। जिससे लोगों की भीड़ जमा हो गई बताते हैं कि मृतक के शरीर पर सिर्फ अंडरवियर मौजूद थे। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जांच पड़ताल करते हुए घंटों पहचान कराने के लिए प्रयास किया, लेकिन बरामद शव की पहचान न होने पर पुलिस ने अज्ञात में पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए।

सिकंदराबाद-दानापुर क्लोन विशेष गाड़ी का संचालन

प्रयागराज। रेल प्रशासन द्वारा यात्रियों की सुविधा हेतु पूर्ण आरक्षित क्लोन विशेष गाड़ियों का संचालन किया जा रहा है। इन गाड़ियों का एआरपी दस दिनों का होगा। उमरे के जनसम्पर्क अधिकारी अमित मालवीय के अनुसार पूर्व में सूचित गाड़ी सं. 02787-02788 सिकंदराबाद- दानापुर क्लोन विशेष गाड़ी में सिकंदराबाद से गाड़ी सं. 02787 प्रतिदिन 21 सितम्बर से तथा दानापुर से गाड़ी सं. 02788, प्रतिदिन 23 सितम्बर से अगले निर्देश तक चलेगी।

पूर्व परिवहन मंत्री के बेटे सहित काफी संख्या में लोगों ने ली कांग्रेस की सदस्यता

गंगा पार अध्यक्ष रामकिशुन सिंह पटेल ने माला पहना कर सभी कार्यकर्ताओं का किया स्वागत

प्रयागराज। सोमवार को पूर्व परिवहन मंत्री नंदलाल पटेल के बेटे राजू सिंह पटेल के साथ काफी संख्या में लोगों ने कांग्रेस पार्टी का दामन थाम लिया। कांग्रेस पार्टी में शामिल होने के पश्चात राजू सिंह पटेल ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान बताया कि वह उत्तर प्रदेश में प्रियंका गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी की बढ़ती लोकप्रियता और पार्टी की नीतियों से प्रभावित होकर मैं अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण किया है। कांग्रेस पार्टी में शामिल कराने की अहम भूमिका प्रदेश सचिव, जनपद प्रभारी सुशील पासी, जिलाध्यक्ष राम किशुन पटेल, शहर अध्यक्ष नफीश अनवर और जिला प्रवक्ता डॉ अजय प्रकाश सरोज की रही। कांग्रेस में शामिल सभी कार्यकर्ताओं का स्वागत करते हुए प्रदेश सचिव सुशील पासी ने कहा कि ₹ केंद्र और राज्य में बीजेपी के गलत नीतियों खिलाफ सिर्फ कांग्रेस पार्टी ही लड़ रही हैं। कांग्रेस पार्टी किसानों और नौजवानों के हितों के साथ हमेशा खड़ी रही है। बीजेपी ने किसान विरोध कानून लाकर खेती किसानी को पूंजीपतियों के हवालें करके किसानों के पीठ पर छुरा भोकने का काम किया है। श्री पासी ने आगे कहा कि पूरे उत्तर प्रदेश में कांग्रेस पार्टी के प्रति जनता का उत्साह बढ़ता जा रहा हैं । गंगा पार जिला अध्यक्ष रामकृष्ण सिंह पटेल ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि प्रदेश की जनता 2022 में प्रियंका गांधी जी के नेतृत्व में सरकार बनाने का मन बना चुकी हैं । यह लहर अब

कांग्रेस में शामिल कार्यकर्ताओं का माला पहनाकर किया गया स्वागत

किसी के रोकने से रुकने वाली हैं । प्रदेश की जनता चाहे वह व्यापारी वर्ग हो, नौजवान हो मजदूर हो तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले बेरोजगार नौजवान हो सभी ने ठान लिया है कि प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी का परचम लहराना है। देश व प्रदेश मोदी व योगी के सरकार से समाज का हर वर्ग परेशान हो गया है वह देश और प्रदेश में इनको सत्ता में लाकर अपने आप को ठगा ठगा सा महसूस कर रहे हैं । कार्यक्रम के अंत में कांग्रेस पार्टी में शामिल राजू पटेल में राष्ट्रीय नेतृत्व श्रीमती सोनिया गांधी और राहुल गांधी के साथ ही यूपी प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हुए कहा कि भाजपा सरकार किसानों और नौजवानों को बबार्दी के कगार पर लाकर खडा कर दिया है। बीजेपी की गलत नीतियों के चलते बेरोजगारी अपने चरम पर है जिससे प्रतियोगी छात्र निराश व हताश है , और अवसाद में आत्महत्या करने को मजबूर हो रहें हैं। स्व.राजीव पटेल की आत्महत्या हमारे समाने उदाहरण है। मैं कांग्रेस पार्टी में शामिल होकर खुद को गौरान्वित महसूस कर रहा हूँ , जनपद में पार्टी को मजबूत करने के लिए साथियों के साथ संघर्ष करूँगा । राजू सिंह पटेल के साथ पार्टी की सदस्यता लेने वालों नाम में इंजी. विक्रम सिंह, सुरेंद्र मौर्या, इंजी. पंकज सिंह, अमित पटेल, एडवोकेट सत्येंद्र सिंह पटेल, नरेंद्र प्रताप सिंह, अजय कुमार साहू, उमा शंकर गौतम, संजय सिंह पटेल, उमेश कुमार सिंह, अयोध्या प्रसाद सरोज ,शनी जायसवाल, चंद्रशेखर पटेल, राम सहाय आदिवासी, महेश कुमार कोटार, रामू सोनकर, महेन्द्र प्रसाद यादव, राजेश गुप्ता, बलवंत पटेल, प्रशांत सिंह पटेल, दीपक सिंह पटेल, सर्वेश सिंह पटेल सहित सैकड़ों समर्थक कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण किये। इसके अलावा झूँसी के समाजसेवी राणा बृजेश प्रताप सिंह पार्टी में शामिल हुए । इस दौरान कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता नाम फुजैल हाशमी, ओम प्रकाश तिवारी, किशोर वार्ष्णेय, अंशुमान सिंह पटेल, संजय तिवारी, आरके गौतम, सत्या पांडेय, रजिया सुल्तान, जिला शहर कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी जिला प्रवक्ता डॉ अजय प्रकाश सरोज, जिला महासचिव सन्तोष सिंह, ओम प्रकाश सरोज, बलराम बिन्द, शादाब अहमद, अशोक मिश्रा, जिला सचिव अजीत भारतीय, दिवाकर भारती, राम प्यारें शर्मा, मन्नान अंसारी, मंगली प्रसाद कुशवाहा, सुरेश यादव, अनिल पांडेय, नशीम हाशमी, बृजेश गौतम, राम जी विश्वकर्मा , अशफाक अहमद, देवराज उपाध्यय, आशीष पांडेय, इश्तियाक अहमद, सिपतैंन बबलू, सहित सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित रहें।

मऊआइमा के कोरोना योद्धाओं को किया गया सम्मानित

मऊआइमा। दिन रात अथक मेहनत करके कोरोना वायरस से लोगों को बचाने वाले मऊआइमा के स्वास्थ्य कर्मियों को सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। मऊआइमा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में कोरोना से बचाव और उपचार एंव प्रचार तथा कोरोना के मरीजों को उपचार के लिए भर्ती कराने वाले गठित टीम को कोरोना योद्धाओं की टीम की संज्ञा देते हुए। सोमवार को मऊआइमा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र प्रभारी राम गोपाल वर्मा, स्वास्थ्य शिक्षाधिकारी सुनील कुमार तथा सोरांव चिकित्सा अधिकारियों ने मऊआइमा कोरोना टीम के स्वास्थ्य प्रवेक्षक अशोक सिंह, डाक्टर शिवा अंसारी,

कोरोना योद्धा को सम्मानित करते हुए

स्वास्थ्य अधिकारी सुनील, डाक्टर गुंजन अरूणा, फार्मासिस्ट लवलेश सिंह, तथा संगिनी को कोरोना योद्धा का सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। जिसमें कोरोना योद्धाओं के हौसले बुलंद हैं।

बालू लदे ट्रैक्टर की चपेट में आकर दरोगा की दर्दनाक मौत

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के चाका गांव के समीप मछली गेट के निकट सोमवार को बालू लदे ट्रैक्टर की चपेट में आने से एक दरोगा की मौत हो गयी। जबकि उसका बेटा जख्मी हो गए। जिससे परिजनों में कोहराम मचा रहा। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए। वहीं दुर्घटना ग्रस्त वाहनों को कब्जे में ले लिया।

जानकारी के मुताबिक नैनी कोतवाली क्षेत्र के पीडीए कालोनी निवासी राजेन्द्र प्रसाद पटेल(४३) पुत्र गोलर आजमगढ जिले में बतौर आबकारी विभाग में दरोगा के पद पर तैनात थे। बीते दिनों वह अवकाश पर अपने नैनी स्थित घर पर आए थे। सोमवार को अपने पुत्र शुभम पटेल(१७) को साथ लेकर स्कूटी द्वारा चाका गांव किसी कार्य हेतु गये हुए थे।शाम लगभग छः बजे पिता पुत्र वापस घर की ओर लौट रहे थे। जैसे ही मछली गेट के समीप पहुंचे एक ट्रैक्टर ट्राली पर ओवर लोड बालू लादकर चालक तेज रफ्तार से गुजर रहा था। जिसकी चपेट में स्कूटी सवार आ गए। जिससे राजेन्द्र प्रसाद पटेल की मौत हो गई और उनका बेटा जख्मी हो गया। दुर्घटना के बाद चालक वाहन समेत भागने लगा तो राहगीरों ने पकड़ने के लिए दौडाया तो वह बालू लदे वाहन को छोड़कर फरार हो गया। मृतक राजेन्द्र प्रसाद पटेल की पत्नी आशा देवी व चार बेटी व दो बेटे दुर्घटना स्थल पर पहुंचे शव देखकर कोहराम मच गया।

हादसे में दरोगा की मौत के बाद घटनास्थल पर जुटी लोगों की भीड़

ट्रिपल आईटी में पांच दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला शुरू

रचनात्मकता से बुद्धि में तीक्ष्णता आती हैः निदेशक

प्रयागराज। भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, प्रयागराज के प्रबंधन विभाग द्वारा 'समस्या का रचनात्मक समाधान और विवेचनात्मक चिंतन' विषय पर सोमवार से शुरू हुए पांच दिवसीय संकाय विकास आनलाइन कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के निदेशक प्रो. पी.नागभूषण ने करते हुए कहा कि रचनात्मकता से बुद्धि में तीक्ष्णता आती है। प्रतिभागियों को नवाचार और प्रबंध नवाचार की चुनौतियों, संभावनाओं, मुद्दों, अवसरों, व्यावहारिक पहलुओं पर गहन

अध्ययन करना है।

कार्यक्रम समन्यक डॉ. विजयश्री तिवारी ने कार्यशाला की रुपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि उद्योग क्षेत्र में रुचि रखने वाले उद्यमियों, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं के लिए यह कार्यशाला एक सुनहरा अवसर है। आज के युग में उद्योग जगत में शिक्षाविद बहुत सारे शोध कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. माधवेन्द्र मिश्र ने बताया कि विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करने एवं समाधान हेतु विभिन्न नवीन विचारों की आवश्यकता होती है। समस्या एवं परिवर्तनशील कारकों की बदलती प्रकृति और बहुआयामी विशेषता के आधार पर विभिन्न सुविधाओं हेतु तमाम उपाय करने वाले पेशेवर एवं शोधकताओं की आवश्यकता होती है। यही संसाधन की उपलब्धता और विभिन्न परिस्थितियों में उनकी मौजूदगी से समस्याओं के समाधान में एक नया आयाम जोड़ती है। संस्थान के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी डॉ. पंकज मिश्र ने बताया कि कार्यशाला में प्रमुख वक्ताओं में प्रो. प्रमोद पाठक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईएमएम) धनबाद, प्रो. वाई सिन्हा इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रो. उमाशंकर तिवारी, मनु शर्मा पार्टनर विप्रो डिजिटल कन्स्टेन्सी यूके, अभिनव जौहरी निदेशक एवं प्रैक्टिस प्रमुख डिजिटल ट्रांन्सफारमेशन बंगलौर, प्रशांत मिश्र वीपी डिजिटल ट्रांसफारमेशन गुडगांव रहे। प्रो. शेखर वर्मा अधिष्ठाता (आईपी एण्ड आरएम), प्रो. टी लाहिड़ी, अधिष्ठाता (शोध एवं विकास), प्रो. अनुपम अग्रवाल, अधिष्ठाता (टीपीए), प्रो. शीर्षू वर्मा, कुलसचिव ने अपने विचार रखे। डॉ. माधवेन्द्र मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इलाहाबाद बैंकमित्र पर पैसे की हेराफेरी का आरोप, शिकायत

कोरांव। संबंधित थाना अंतर्गत रामगढ़ खीरी के रहने वाले रामराज वर्मा पुत्र रामनिरंजन वर्मा ने इलाहाबाद बैंक की शाखा अयोध्या के एक बैंक मित्र पर पैसे की हेराफेरी का आरोप लगाया है। शाखा प्रबंधक को लिखे शिकायती प्रार्थना पत्र में उन्होंने बैंकमित्र पर कार्यवाही किए जाने की मांग की है। रामराज ने बताया कि वह मुम्बई में प्राइवेट जॉब करता है तथा पैसों की बचत हेतु अपना खाता इलाहाबाद बैंक शाखा अयोध्या में खोलवाया था। लॉकडाउन के दौरान जब वह घर आया तब उसे पैसे की जरूरत हुई। इस दौरान उसकी मुलाकात बैंकमित्र संजय सिंह से हुई। उसने जब संजय से पैसा निकलवाने के लिए कहा तो उसने उसे 1 जून को 10 हजार तथा 30 जून को 1 हजार रुपए उसके खाते से निकाल कर दिए। वह जब 21 सितंबर को बैंक पहुंचकर अपना खाता अपडेट कराया तो उसके खाते से 1 जून को 20 हजार तथा 30 जून को 10 हजार निकाले गए थे। यह देख उपभोक्ता के होश उड़ गए। रामराज ने इसकी शिकायत शाखा प्रबंधक सहित इलाकाई पुलिस से की है।

भाजपा नेता के खिलाफ रंगदारी मांगने के आरोप में रिपोर्ट दर्ज

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र स्थित मुंगारी स्थित टोल प्लाजा के मालिक ने मेजा के सिरसा मंडल अध्यक्ष भाजपा श्यामराज यादव के खिलाफ सोमवार को रंगदारी मांगने व मारपीट करने सहित गंभीर आरोप लगाते हुए औद्योगिक थाने में मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने श्यामराज यादव को उनके आवास लोहारी से गिरफ्तार कर लिया।औद्योगिक थाना क्षेत्र के मुंगारी टोल प्लाजा करछना के प्रभारी प्रबंधक पंकज शुक्ल ने भाजपा मंडल अध्यक्ष सिरसा श्यामराज यादव के खिलाफ १९ अक्टूबर को एक तहरीर देकर आरोप लगाया था कि श्री यादव कई महीनों से आये दिन टोल प्लाजा पर आकर गुंडा टैक्स रंगदारी मांगते हैं और मना करने पर सरकार की धौंस देकर टोल प्लाजा बन्द कराने की धमकी देते हैं। कहते हैं बीस हजार प्रति सप्ताह दो या बीस ट्रक प्रष्ठी में जाने दो मना करने पर हमसे और कर्मचारियों से मार पीट करते है।तहरीर के आधार पर औद्योगिक थाना क्षेत्र की पुलिस ने मामले की जाँच किया मामला सही पाए जाने पर पुलिस ने सोमवार को श्यामराज यादव के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज करते हुए गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने मण्डल अध्यक्ष सिरसा को पुलिस ने कोर्ट में पेश किया लेकिन जमानत ने मिलने से जेल भेज दिए गए।

शिवभक्तों ने भूतभावन भगवान की किया पूजा अर्चना

लालापुर। लालापुर स्थित मनकामेश्वर धाम में अधिक माह के पहले सोमवार के दिन शिव के भक्तों ने बोल बम के नारे के साथ भूतभावन भगवान की पूजा अर्चना की । कोविड 19 के नियम के अनुरूप ही मंदिर के पट को बंद रखा गया था । जिससे बाहर से ही भक्तों ने पूजा अर्चना की । लालापुर स्थित मनकामेश्वर धाम में सावन माह में लगने वाले मेले में विगत बर्षों में दूर दराज के भक्त जलाभिषेक करने के लिए आते थे। भारी संख्या में कांवरियों का जत्था भी भोले नाथ के दर्शन के लिए पहुंचता था। लेकिन इस बार कोरोना संक्रमण को लेकर प्रशासन ने कांवड़ यात्रा सहित मंदिरों के पट को भी बंद कराने का निर्देश जारी कर दिया है। जिससे भीड़ भी इस बार मेले में नहीं पहुंच रहीं है। स्थानीय स्तर के भक्त ही भोले बाबा का दर्शन पूजन के लिए पहुंच रहें है। सावन के दूसरे सोमवार के दिन भक्तों ने जयकारे के साथ शिव की पूजा अर्चना की।

रेलवे ट्रैक पर मिला वृद्ध का क्षत-विक्षत शव

शंकरगढ़। थाना क्षेत्र के तालापार के समीप रेल की पटरी पर सोमवार की सुबह एक वृद्ध व्यक्ति की लाश मिली। सूचना पर शंकरगढ़ पुलिस मौके पर पहुंची और शव का शिनाख्त करने का प्रयास किया, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। बाद में शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बता दें कि सोमवार की सुबह शंकरगढ़ पुलिस को रेलवे स्टेशन मास्टर ने सूचना दी कि थाना क्षेत्र के तालापार गांव के समीप रेल की पटरी पर एक 60 वर्षीय अज्ञात वृद्ध की लाश पड़ी है। जिस पर थानाध्यक्ष राजेश उपाध्याय एवं कस्बा इंचार्ज अमित कुमार सिंह मौके पर पहुंचे और देखा कि एक 60 वर्षीय वृद्ध व्यक्ति की लाश क्षत-विक्षत अवस्था में पडी है। जिसका दाहिना हाथ व कई अंग कट गया था. फिलहाल समाचार लिखे जाने तक वृद्ध व्यक्ति की शिनाख्त नहीं हो पाई थी। परंतु पास की झाड़ी में उसका जूता काले रंग का व उसकी लुंगी पड़ी हुई थी । फिलहाल शंकरगढ पुलिस ने बॉडी को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया है।

तेज आंधी से गिरा पेड़, महिला सिपाही जख्मी, रेफर

मऊआइमा थाना परिसर में तेज आंधी के चलते गिरा महुए का पेड़

मऊआइमा। सोमवार को दोपहर में अचानक मौसम का मिजाज बिगड़ने पर तेज आंधी आयी । मऊआइमा थाना परिसर में लगा महुआ का पेड जमीन दोज हो गया। जिसकी चपेट में आने से महिला सिपाही जख्मी हो गई। जिसे एस आर एन के लिए रेफर कर दिया गया है। कई दिनों से पड रही भीषण गर्मी से हर कोई परेशान था। सोमवार को दोपहर में तेज आंधी हल्की बारिश से लोगों ने राहत की सांस ली । और तेज आंधी के कारण थाना परिसर में लगे महुआ का पेड गिर पडा । जिसकी चपेट में आने से थाने में तैनात महिला सिपाही प्रज्ञा मौर्या जख्मी हो गई। जिसे पहले पुलिसकर्मियों द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले जाया गया । जहां एस आर एन के लिए रेफर कर दिया गया है । बताते हैं कि महिला सिपाही का पैर टूट गया है ।

शंकरगढ़ पुलिस ने हिस्ट्रीशीटर को देसी बमों के साथ दबोचा

शंकरगढ़। शंकरगढ़ पुलिस ने पीपीजीसीएल चौकी क्षेत्र से एक शातिर अपराधी को गिरफ्तार किया है, जमा तलाशी में उसके पास से 4 देसी बम भी बरामद हुए हैं। थानाध्यक्ष शंकरगढ़ राजेश उपाध्याय ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर पीपीजीसीएल चौकी क्षेत्र के चंदनवा चरहारी पहाड़ी के पास से एक शातिर हिस्ट्रीशीटर कमलेश को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्त में आया अभियुक्त कमलेश उर्फ कप्पे उर्फ राजेश आदिवासी पुत्र स्वर्गीय छविलाल उर्फ चुन्नीलाल निवासी ग्राम हल्दीकला मुंगारी थाना आद्योगिक क्षेत्र जनपद प्रयागराज, हालपता मिश्रापुरवा थाना शंकरगढ़ का रहने वाला है। पुलिस ने बताया कि इस मामले में अभियुक्त की तहकीकात की गई तो पता चला कि इसके विरुद्ध औद्योगिक क्षेत्र थाने में 7 मामले दर्ज हैं।पूछताछ के बाद पुलिस ने अपराध संख्या 345/20 20 धारा 4/5 के तहत एफआईआर दर्ज कर चालान कर दिया। गिरफ्तार करने वाली टीम में सब इंस्पेक्टर जयचंद गिरी चौकी प्रभारी पीपीजीसीएल और कांस्टेबल आलोक जीत सिंह शामिल रहे।

सरकार के विरोध में सड़क पर उतरे सपाई, सौंपा ज्ञापन

करछना। प्रदेश सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के आह्वान पर समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने करछना में धरना देकर विरोध प्रदर्शन किया, प्रदेश में महंगाई चरम पर हैए लोगों को स्वास्थ्य सुविधा नहीं मिल पा रही है, प्रत्येक सरकारी विभाग में भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार है, घूस लिए बिना कोई काम नहीं हो रहा है। सौपे गये ज्ञापन मे प्रमुख रूप से बिजली की दरो मे बेतहाशा वृद्धि और बुनकरो को फ्लैट रेट पर बिजली उपलब्ध कराने बकाया वसूली कोरोना काल मे रोकी जाए, फर्जी एनाकाउंटर बंद हो हिरासत मे मौतो की न्यायिक जाच हो, छात्रो के 5 माह की फीस माफ हो बडे स्कूलो मे पात्र गरीब छात्रो का प्रवेश दिलाया जाए, बीएड व अन्य पाठक्रमो मे पुरानी व्यवस्था लागू होण्अपराधो की रोकथाम हो महिलाओ व बच्चियो के साथ दुष्कर्म की घटनाओ पर पुलिस प्रशासन को

प्रदर्शन करते सपा कार्यकर्ता व उपजिलाधिकारी को करछना को ज्ञापन सौंपते हुए

प्रभावी कार्यवाही के आदेश एसमाजवादी पार्टी के नेताओ कार्यकर्ताओ का फर्जी केस लगाकर उत्पीडन बद हो जेल मे बद पूर्व मंत्री आजम खां व उनके परिवार को बदले की भावना से किया जा रहा उत्पीडन बंद हो। बेरोजगार युवाओ को रोजगार भत्ता दिया जाए, विधानसभा मे हो रही अधाधुध बिजली की कटौती तत्काल बद हो करछना की नहरो मे तत्काल पानी छोडा जाए। क्षेत्र मे बद पडे नलकूपो को ठीक कराया जाए और विधानसभा की छतिग्रस्त सडके तत्काल बनवायी जाए सहित मागो को लेकर उपजिलाधिकारी करछना को ज्ञापन सौपा गया। ब्लाक प्रमुख करछना विजयराज सिह, प्राजेश्वर पाडेय, हंसराज सिंह, एसलील अहमद, हिमांशु मिश्र, संदीप शुक्ला, पंकज कुमार, योगेश, संदीप शर्मा दुर्गेश पाडेय सहित सैकड़ों सपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

तहसील मे हुआ सेनेटाइज

करछना। तहसील मे दो कर्मचारियो के पाजटिव मिलने के बाद सोमवार को तहसील परिसर और दफ्तरो मे सेनेटाइज किया गया बताया जाता है कि तहसील मे कार्यरत दो लेखपाल के पाजटिव पाये जाने से तहसील मे हडकप मचा रहा है।जिससे दोपहर मे ही तहसील बद करा दी गई और टैकर से पू ंपरिसर को सेनेटाइज कराया गया जिससे सक्रमण न फैल सके।

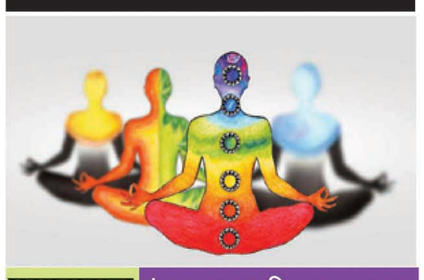

प्रयागराज मंगलवार, 22 सितम्बर, 2020

क्रियायोग सन्देश

क्रियायोग द्वारा मृत्यु पर विजय –अद्भुत महासमाधि

मनुष्य के जीवन की उपलब्धियां उसकी समाधि व महासमाधि पर आधारित है। मनुष्य किस प्रकार जीवन व्यतीत किया है उसका जीवन आत्मज्ञान की दिव्य ज्योति से प्रकाशित था या नहीं, इसका निर्णय इस सत्य से स्पष्ट हो जाता है कि वह किस प्रकार शरीर छोड़कर दृश्य से अदृश्य रूप में रूपांतरित हुआ। क्रियायोग के इतिहास में अनेक आत्मज्ञानीयों ने जनसमूह के सम्मुख अमरता पर प्रवचन करते हुए चैतन्यावस्था में महासमाधि में प्रवेश किया।

क्रियायोग एक प्रमाणित आध्यात्मिक विज्ञान है, जिसका भक्तिपूर्वक अभ्यास करने पर निश्चित रूप से मनुष्य एक ही जीवन काल में पूर्ण आत्मज्ञान की प्राप्ति कर पैगंबर में रूपांतरित हो जाता है। इस सत्य को प्रमाणित करने वाले अनेक ऋषि मुनि हुए हैं, जिनको जीवन मृत्यु पर पूर्ण अधिकार था। वह इच्छा अनुसार शरीर में प्रवाहित होने वाली विश्वव्यापी प्राण शकती को शरीर से बाहर निकाल कर चैतन्य मृत्यु जिसे समाधि कहा गया है, का अनुभव कर लेते थे तथा इच्छा अनुसार शरीर में पुनः प्राणशक्ति का संचालन करके जीवन की संपूर्ण संवेदनाओं - हृदय गति, श्वास गति, नाड़ी गति आदि को क्रियाशील कर लेते थे। जीवन व मृत्यु की अनुभूतियों में चैतन्यपूर्वक बार-बार प्रवेश करने पर मृत्यु भय शून्य हो जाता है। ऐसी अवस्था में साधक अमरता का अनुभव कर लेता है और वह बाइबिल में लिखें सत्य- 'मृत्यु भी विजित हो चुकी है ' ओ मृत्यु ! तुम्हारा देश कहां है? ओ शमशान ! तुम्हारी विजय कहां है ?' -1 कोरियनथस 54:55, को प्रमाणित कर देता है।

मृत्यु स्वप्न है, सत्य को प्रमाणित करने वाले महान पैगंबर प्रभु ईशा सूली पर चढ़ने के बाद तीसरे दिन पुनः प्रकट होकर शिष्यों को दर्शन दिए तथा यह प्रमाणित किया कि वह मरे नहीं हैं बल्कि परमात्मा के साम्राज्य में शाश्वत रूप से जीवित है। प्रभु ईसा के परम शिष्य संत पाल क्रियायोग की साधना में अलौकिक सिद्धि प्राप्त किए थे। इसलिए उन्होंने लिखा है कि मुझे ईशा में जो परम आनंद प्राप्त होता है, मैं उस आनंद की शपथ खाकर कहता हूं कि मैं प्रतिदिन मरता हूं। संत पाल प्रतिदिन निर्विकल्प समाधि में प्रवेश करके अमृत का पान करते थे, यही उनका मरने का अभिप्राय है। स्वरूप का कोई भी अंश मृत्यु को नहीं प्राप्त होता है। इसका प्रत्येक अंश दृश्य अथवा अदृश्य रूप में सदैव विद्यमान रहता है। रूपांतरण की क्रिया में जिस प्रकार पानी से बर्फ, बर्फ से वाष्प तथा वाष्प से पानी, पानी से बर्फ में बदलता रहता है। इस तरह पानी कभी भी मरता नहीं है, उसका स्वरूप रूपांतरित होता रहताा है। ठीक उसी प्रकार मानव अस्तित्व दृश्य से अदृश्य तथा अदृश्य से दृश्य तत्व में रूपांतरित होता रहता है। स्वरूप रूपांतरण की क्रिया इतनी सूक्ष्म होती है कि उसे मन, बुद्धि व इंद्रियों की सीमित अनुभूत के द्वारा समझा नहीं जा सकता है। इसे अनुभव करने के लिए अतींद्रिय दृष्टि की आवश्यकता होती है, जिसे क्रियायोग की भक्ति पूर्वक साधना से सहजता में प्राप्त किया जा सकता है। क्रियायोग के अभ्यास से शरीर को दृश्य से अदृश्य व अदृश्य से दृश्य में रूपांतरित होने की सूक्ष्म घटना का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। तथा इस सूक्ष्म रूपांतरण को इच्छा अनुसार प्रकट करने की विधि पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त होता है। ऐसी अवस्था में साधक जीवन व मृत्यु की संपूर्ण स्थितियों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लेता है। वह शाश्वत आत्मा के रूप में स्वयं को अनुभव करता है, वह अनुभव करता है कि आत्मा - परमात्मा ही शरीर रुप में प्रकाशित है। इस ज्ञान की पूर्ण अनुभव ही 'परामुक्त' अवस्था है।

Kriyayoga Science for Victory over Death

The ultimate achievement of a person's life is based on the attainment of Samadhi and Mahasamadhi. Whether the life journey of a person has been adorned with The Divine Light of Enlightenment determines how the person leaves body. In the lineage of Kriyayoga, there have been many enlightened masters who entered into Mahasamadhi consciously while giving discourse on immortality in front of the masses.

Kriyayoga is a proven spiritual science. With the devoted practice of Kriyayoga, the practitioner can attain complete enlightenment in one lifetime and be uplifted into Prophet-consciousness. There are many saints and sages who proved this fact and had complete control over life and death. These saints and sages were able to consciously perform death by willingly withdrawing the universal life-force flowing in all parts of the body to be in a state known as samadhi. At the same time, they were able to reactivate, as well as re-energize, all the life processes of the body (heart rate, breathing rate, pulse rate, etc.) according to their desire.

By repeatedly entering the states of life and death consciously, the fear of death is removed. In such a state, the seeker experiences Immortality and attests the Truth written in the Bible: **"So when this corruptible shall have put on incorruptibility, and this mortal shall have put on immortality, then shall be brought to pass the saying that is written, Death is swallowed up in victory. O death, where is thy sting? O grave, where is thy victory?" –(1 Corinthians 54:55)**

Death is a dream. This was proved by the great Prophet, Lord Jesus. On the third day after crucifixion, Jesus appeared to his disciples, proving that he is not dead but is alive forever in the kingdom of God. The great disciple of Lord Jesus, Saint Paul, also attained similar extraordinary height through the practice of Kriyayoga. **He was therefore able to say: "Verily, I protest by our rejoicing which I have in Christ, I die daily." – (1 Corinthians 15:31). By saying "I Die Daily", Saint Paul meant that he used to enter into the state of Nirvikalpa Samadhi daily whereby he used to drink the divine nectar of Immortality.**

File Photo

No part of our existence dies. Every part always exists in the visible or invisible form. Let us look at the example of water where vapour becomes water, and water becomes ice. Likewise ice becomes water which becomes vapour. In this way, we can see that water never dies. There is simply a constant transformation of the form of water. Similarly, human existence keeps transforming from visible to invisible and from invisible to visible states. The process of transformation of form is so subtle that we cannot comprehend it with the limited perceptions of our mind, intellect and senses. To perceive this transformation, we require transcendental vision.

By the devoted practice of Kriyayoga, one is able to attain and perceive the knowledge of this phenomena of subtle transformations of the body from visible to invisible and from invisible to visible states. Furthermore, one can also attain complete control over the method of subtle transformation of states and have full control over all the states of life and death. Then, one experiences oneself as an eternal Soul and also realizes that Infinite God has become our form. The perception of this knowledge is the state of liberation (moksha).